सुरस्मर साधि रच्यौ यहि मैं बनि मैन अहेरी। घायल क्यौं न करै करि हायल पाइ परौं बलि पायल तेरी ॥ २७३ ॥

सोरठा।

क्यौंन लङ्क लचि जाइ, पीन पयोधर भर भरी।
यातें कहियत हाइ, ऐसें रुचियन औचका॥२७४॥

परिकरांकुर लक्षण।

अभिप्राय जहँ क्रिया करै है विशेष्य पद बीच।
परिकरअंकुर कहत तहँ जे हैं सुकवि निभीच॥

यथा।

रूसनहारी लखी कितनौ पर या विधि सौं तन काहु न तायो। पानि औ पान बिसारि हहा तुम ऐसी भई सब द्यौस गवायो॥ गोकुलताप हरै गो लखि अबहूं तौ चहौ पग बाहिरे नायो। पाय परौं गिरौ बीर बलाय ल्यौं बाम सुधाधर धाम पै आयो॥ २७६ ॥

सोरठा।

क्यौं न मधुव्रत होइ अविवेकी या जगत में।
निसिकमलनमेंसोइ फिरत चाक ढाकन लखो॥

श्लेष लक्षण।

अलंकार अश्लेष तहँ बरनत हैं सुखधाम ।
जहां अर्थ है तीनि को संग होत अभिराम ॥
वर्न्यवर्न्य को श्लेष यक औ अवर्न्य को एक ।
वर्न्य अवर्न्यहु को कहत कविजनसहितविवेक॥

वर्न्यश्लेष—यथा।

ढरै मधु माधुरी पराग सुबरन सनी सरस सलोनी पाय तापन के अन्त की। कामना जु-गति की उकुति सरसावत सी यावै मधुराई कलकोकिल के भन्त की॥ गोकुल कहत भरी गुनन गँभीर सौरी कानन लौं आवति पियूख ऐसे वन्त की। ऐसी सुखदानी हौ न जानी ज-गती में और कबिन की बानी बर बेहर बसन्त की॥ २८०॥

सोरठा।

तो तन सुख को रंग चटक भरो नीको लगै।
गहिरो गहै उमंग लग्यो लाल सोधे पग्यो॥

अवर्न्यश्लेष—यथा।

आजु कौन तोसी बारवधू भूमि मण्डल

में भाग सो भरी है गुन रूप जुगतन की। बिधि की गढ़ी है तू पढ़ी है प्रेम नेम करि काम मंत्र तंत्र की रिचा सी सुकतन की ॥ गोकुल बिलोकि बार बार बलि जाति बलि ऐसी कथा भाल में लिखी है मुकतन की। रावरे की मांग को निहारि मांग एजू सुनी बारि बारिजाति की में माल मुकतन की ॥ २८२ ॥

सोरठा।

री कुच तेरे बाल भरे अपूरब पुन्य सों।
लखि मुकुतन की माल धन्य हीन चाहत भजै॥

बर्न्याबर्न्यश्लेष यथा।

फूल सों भरी है हरी हेरत हियो हरति घनी सुख मनी संपनी है रति कान्त की। सरस सुबासरली चलि चवलीन मिली बिरती बनी सी वर बसीकर मन्त की ॥ गोकुल बिचित्र चंग रंगन सों रई राजै नई सुखमा सी भूरि भूतल अनन्त की। आपुन बिहारी ही बिहार करि देखी बनी बीस बिसे प्यारी फुलवारी है बसन्त की ॥ २८४ ॥

सोरठा।

तो चख लखिली बाम सपरसितीं मुख लाज तै
अति आतुर तन स्याम करे दुरे अरबिन्द मे ॥

अप्रस्तुतप्रसंसा लच्छन।

अप्रस्तुत सो होति है जहं प्रस्तुत की ऊह।
अप्रस्तुत परसंस कह ताको सुकबि समूह॥२८६॥

यथा।

नेकु छुटै जुटै दौरि कै तौन अगौति बि-
योग की एक सला है। मोद भरी घनस्याम कै
ही मैं बसै सब जाम भई अचला है॥ गोकुल-
नाथ सराहिवे जोग करे यहि को प्रन प्रेम भला
है जानि परे जगती तल बीच संजोगिनि एक
अरी चपला है॥

अपरंच।

तोहि बिना जल रासिन तें ददुरागन मो-
रन को सुख पावै। थावर जंगम जो जग में
सब फूलै फरै मुद मंगल गावै॥ गोकुल तोहि
जप्यो इतनै दिन मौसर औसर तू न गँवावै।

बारिद एतो बिबेक बिचारिबो चातिक तोहिँ अकेलोई ध्यावै ॥ २८८ ॥

सोरठा।

यह जग धन्य चकोर, सकल द्यौस आनँद तजै।
ससि लखि लखै न और, घनउड़गनग्रहैगनउचै॥

प्रस्तुतांकुर लक्षण।

प्रस्तुत तें द्यौतन जहाँ प्रस्तुतुही को होत।
प्रस्तुतअंकुर कहत तहँ अलंकार कबिगोत॥

यथा।

सारस सरस हंस बंसन सों सोहति है पानिप के पूर पेखि परसि सुधासि तू। लहरनि लेति छहरनि सुखमा की क्यौं न बारिजन हेरि हियो हरषि हुलासि तू॥ गोकुल कहत ऐसो गहत अयान एरे एतिक सयान मानि ज्ञानगन नासि तू। परम पुनीत ऐसी छोड़ि सरिता को सोधै खलप सरोवरनि पथिक पियासि तू॥२८९॥

सोरठा।

अलि कदंबतरु पाइ, सुमनभरो मकरंदमै।
तजि करील पै जाइ, निरस अपत परसे कहा॥

पर्यायोक्ति लक्षण।

जहां कहे पर जाय कै बोध अर्थ निज होत ।
परयायोक्ति तहाँ कहैं अलंकार कविगोत ॥

यथा।

ताड़का सँघारि मारि सबल सुबाहु-सैन जग्य करवायो रिखिराय जू सो नेत में। तारी ऋषिनारी व्याही जनककुमारी भारी तोरि कै पिनाक धाक बीरन के चेत में ॥ गोकुल तू ताहि भज खलमर खंडन कै बलि बांधि राखि मम सुगरौव हेत में। बांधि सेत समुद्र में सीस दस सीस भुजा रावन के काटे जिन सोहैं रन-खेत में ॥ २६४ ॥

सोरठा।

करीकुंभ गिरिसानु जिन जीते श्रीफल कठिन।
ते नर निपट अजान तिन्हैं छोड़ि औरहि भजैं ॥

द्वितीय पर्याय लक्षण।

छल बल करि कै होत है जहँा सुसाधन इष्ट ।
परजायोक्ति इहौ कहत जे हैं मति-उपविष्ट ॥

यथा।

घाट घनो जमुनातट को नरनारिन की जित भीर मभैये। गोकुल हार वड़े गथ को मुकुतान को ऐसे अहो बिसरैये॥ पायो है मै केहि ते पठयो सो बिना ज्ञन जानि तजो दुचितैये। लीजिये जू पहिरौ अभिराम ही काम बनै चलि धाम में ऐये॥ २८७॥

सोरठा।

अहो पथिक भइसांझ, तटसूनो निरजन सघन।
डरि सरिहौं पथमांझ, रहिघट भरि हौंहू चलौं॥

व्याजोक्ति लक्षण।

निन्दा ते अस्तुति जहाँ निकसति सुनी निमीच।
अलंकार व्याजोक्ति जहँ निन्दा अस्तुति बीच॥

यथा।

देवन को दुज दीनन को जिन पाय पयोधि को पूर पसारो। बालक वैसहि तें बल कै जिन सज्जनपीड़न को प्रण धारो॥ गोकुल जंग जुरे तुरतै जिन दैतन के गन को बन जारो।

देत तिन्हें सुर के पुर को यह कौन सो काम है राम तिहारो ॥ ३०० ॥

सोरठा ।

गए गरधर सिरमाल रचि अरचत जीतो सलिल ।
सरस सुमन को माल तिनै देति तू सुरसरित ॥

स्तुति व्याज निंदा यथा ।

कहत हो सांची तुम सांची हो हूं जानति हौं बतियां तिहारी सब सांची अनुमानो मैं । कबहूं करोगे अपराध साधु साहिब हो साधुन की संगति की इंगित सो मानो मैं ॥ गोकुल के नाथ आए औरही सनाथ करी रावरे को गुन-गन कीन्हों भलेगानो मैं ॥ इतनी भलाई क्यों न चाहत चलाई तुम भैया हलधर के ही दैया तुम्है जानो मैं ॥ ३०२ ॥

सोरठा ।

क्यों न सिरावै हीय अहो पीय पावन परम ।
सकलकलाकमनीय भले परे ससि से परखि ॥

निंदा व्याज निन्दा लच्छन यथा ।

कारो तन, कारो मुख, कुटिल कठोर कूर क्यौं न करि देत बिधि ऐसे महापापी को । कूवत न कोऊ नेकु बैठन न देत नीरे काठ लौं कठोर घोर आखर अलापी को ॥ गोकुल कहत वाहि वैसेही जगत निन्दै करिबे न जोग इतनो हो मदिरापी को । पतित कहावै क्यौं न पच्छी में काग जो पै पालतु है तोसो पिक अपत उतापी को ॥ ३०४ ॥

सोरठा ।

हर को अरि बिन अंग काम सत्रु बिरहीन को।
करि दोषाकर संग तोसौं अति निंदित भयो ॥

आक्षेप लच्छण ।

आपु कहै कहिकै करै आपु निषेध बिचार ।
आक्षेपालंकर सो बरनत कबि निरधार ॥३०६॥

यथा ।

आवत हैं इत दोसभरे इनके सब औगुन तू कहिऐरे। बैठिऐ दूरिही ऐठिऐ भौंहनि

मान कै मौन महा गहिबे रे॥ गोकुल पाइन
पारिबे हेरि के फेरि कह्यौ न इतो नहिये रे।
जैसी करे पिय तैसी करै मन नीको रहैऽब
इतो चहिबे रे ॥ ३०७॥

सोरठा।

हे मन पिय सौं मान, आजु औसि करिये सुनौ।
समुझि कहै जो प्रान, तासौं कबहुं न रूसिये॥

निषिधाभास लच्छन।

पहिले करे निषिध को, फिरि ठहरावै ताहि।
कहत निषिधाभास हैं कबि आछेपहि ताहि॥

यथा।

चाहिये जो अब सो कहिये लखि कै सि-
गरे बलि औगुन मेरे। तोसर सी ठकुराइनि
छोड़ि कहौ किन कौन के लागिहौं नेरे॥ गो-
कुल पाइनि पानि धरें मनमोहन जू यों कहै
हित हेरे। मोहिं न जानि तू प्रानप्रिया अरी
प्रानपिया हम चेरे हैं तेरे॥ ३१०॥

सोरठा ।

सो तन जोबन है न, पाप पाछिले जन्म को ।
पाइ न रखियत नैन, लज सैन सौ बिधि चलै॥

व्यक्त आक्षेप लक्षन ।

प्रगट जहाँ बिधि देखिये है मूठो आक्षेप ।
व्यक्ताक्षेप कहैं सुकबि अलंकार रसलेप ॥

यथा ।

कूकनि मोर पपीहन की सुनि देखति हौं जू कदम्ब के मौरन । दौरत हौं ददुरान मिलौ इन झिल्लिन की झनकार के डौरन ॥ गोकुल कीजे गनेस महा प्रभु आपुन सौं कहिये कछु औरन । लिखन बैसन भावती की बली पेखत हौं धुरवान की दौरनं ॥ ३१३ ॥

सोरठा ।

करिय मान सुखनेत, हौं न आजु वरजति तुम्हैं।
लिय बियोगि बिधिहेत, सुनी सूर सौं ससि कलौं॥

बिरोधाभास लक्षन ।

अर्थ मुख्य सो अर्थ जहँ भासित होइ बिरोध ।
तहां बिरोधाभास है जमक शब्द में बोध ॥

यथा ।

चैन चितौनि भली चरचा सँग जौ लगिहै सँग जौ लगि है ना । अंक कलंक को बंक कछू तनकौ लगिहै तनकौ लगि है ना ॥ गोकुल वा ठग सौं ठगहारी गुनौ लगिहै सो गुनौ लगिहै ना । मोहन गोहन सो सजनी चख तौ लगिहै चख तौ लगिहै ना ॥ ३१६ ॥

सोरठा ।

लहितो परम सोहाग, भई सोहाग बिना सबै ।
लखि सौतिन को भाग, बिना मानहू माननी ॥

विभावना लच्छन ।

कारन बिनु जहँ होत है, कारज कीनो सिद्धि ।
अलंकार सु विभावना तहां कहत बुधिनिद्धि ॥

यथा ।

देखती जौ तब तौ कहती कछु रावरेही की हितू हम तौ हैं । चाहति रावरे के मुख की चखकोर कृपाभरी रावरी जोहैं ॥ गोकुल-नाथ से प्रानपियारे पै ते हैं अयानभरी जे

वै को है। कौन सो नाध्यौ है नाध लली अप-
राध बिना बलि तानति भौहैं॥ ३१९॥

सोरठा।

बिन कजराहू नैन, कजरारे लखियै लखौ।
सौंधो सुतन छुवै न, उठति सौंधाई की लहरि॥

हेतुविभावना लच्छन।

कारज जहँ असमर्थ है करै सो काज बलिष्ट।
तासों हेत बिभावना कहत सुकवि मतइष्ट॥

यथा।

दसहूं दिसान के दिगीस ईस अवनी के
परसि लजाइगे चढ़ाइ भुजभर जो। गोकुल
कहत जौन रंचक उठाइ सकै ऐसो तीन
लोकन में दानव अमर को॥ जनक को सोच
जानकी को परताप देखि दयासिंधु मया करी
कैसी हरबर हो। देखो रामराय जू को कारज
कठोर तोरयो पंकज से पानि सों पिनाक धरा-
धर सो॥ ३२२॥

सोरठा।

गिरि से उरज उतंग, भरे भार लागत लखौ ।
होति न कैसिहु भंग, दरंभअनी सी कटि धरे ॥

तृतीय बिभावना लच्चण।

प्रतिबंधकं तहँ काज को कारन कहिये आनि ।
तिसरी होति बिभावना कविजन कहैं बखानि॥

यथा।

रूपभरी तरुनी तिनको लखि तैसो बसै चित सोभित कीन्हो । गोकुल मैर मनोभव को नख तें सिख लों छरि कै भरि दीन्हो ॥ रावरे को गुन एजू बलाइ ल्यौं पाइ परीं कछु जाय न चीन्हो । मोहन कै मन को सजनी तुम मोहन से ठग को ठगि लीन्हो ॥ ३२५ ॥

सोरठा।

कबहुंनछोड़तिरीति, निपटसुनीतिसुलाजबस ।
जासों हरि बिपरीति, करवाई कहियै कहा ॥

चतुर्थ बिभावना लच्चन।

जाको कारन जो नहीं तातें उपजत तौन ।
कार्ज जाति को कार्णता को है कारन भौन ॥

यथा।

चम्पक की लतिका तें सुबास सुमालती को पसरै सुखदैन री।' कौल के कोस तें गन्ध गुलाब को आवत है लहि दायक चैन री॥ गोकुलनाथ कुहू निसि में यह राका के राति की दाहऽव है न री। देखि कपोत के कंठ ते आली कढ़ै कलकोकिल को बरबैन री॥ ३२८॥

सोरठा।

सखि अचरज्ज नवीन,जपा कंज कुसुमति भरो।
दोइ सिरीफल पीन, फरी पेखि चम्पकलता॥

पञ्चम बिभावना लच्छन।

जहँा बिरोधी कार्ज को कारन कहिये देखि।
उपजत कारज है तहँा पचयों भेद सुलेखि॥

यथा।

तू ठकुराइनि है ब्रज की ब्रजठाकुर हैं हरि क्यों न तकै तू। काहू चवाइन सों सुनि कै भ्रमभूलिभरी सो कहा उझकै तू॥ गोकुल जोग न रावरे के इन सों इतनी रिसि कै उ-

मकै तू। आनन ऐन सुधा को हहा तिहि तें इतनो विष बैन बकै तू॥ ३३१॥

सोरठा।

तोही में गुन बाम, अरी बाम लखि परत है।
बढ़त भयंकर काम, तो कुच संकर सेवतै॥३३२॥

छठईं बिभावना लच्छन।

कारज सो जहँ होत है कारन की उतपत्ति।
अलङ्कार सु बिभावना छठईं कहियत सत्ति॥

यथा।

आवतहीं जमुनातट तें सँग न्हाइ सखीन की राधिका रानी। गोकुलनाथ मिल्यौ मग में सो कहा करिगो कछु जात न जानी॥ हाय उपाय न जाय कियो ब्रज बूड़त है बिनु पावस पानी। धारन सें अँसुवान की है चख-मीनन तें सरिता सरसानी॥ ३३४॥

सोरठा।

तो मुखचन्द अमन्द, स्मिति छीरधि तातें कढ़त।
है चकोर नँदनन्द, हंस होत आनँदभरो॥

विशेषोक्ति लचन।

लहियत कारन बहुत जहँ कारजसिद्धि न होय।
विशेषोक्तिऽलङ्कार सो तहँ कहियत है जोय ॥

यथा।

होस बिनाही सरोस करी इन धूतिन दोस सुनाइ पिया को। गोकुल कैसी भरी रस में रिसि बोइहै यों बिस बैर बिया को॥ चेत को चन्द सुगन्ध समीर मिल्यो सुर कोकिल काकलिया को। हारी मनाइ तऊ सजनी न गयो रजनी भरि मान तिया को॥ ३३७॥

आवतही जमुनातट तें नटनागर डीठ पर्यो अबलै को। ता छिन तें थहरानि थकी सी रही जकि कै भरी काम कलै को॥ गोकुल कैसिऊँ ताप की ताप सों एरी मिटै मन मध्य अलै की। लाइ घनो घनसार सखी छिन प्याइ दै बालहि बाइ मलै की॥ ३३८॥

असम्भव लचन।

जहाँ असंभव अर्थ की घटना करिये आनि।
थाई अद्भुत रस तहाँ आसंभव पहिचानि॥३३९॥

यथा ।

दीन्हों देखाई अचानकहीं यह मानिनि मै चित चेत हरैगी । थोरिही बैस में ऐसी इहा तरुनापन तासे कहाधौं करैगी ॥ गोकुलनाथहि नेकु लखें बिनु हाय कहौ कल कैसे परैगी । जानतही न हुतो सजनी यह छोटी सी छोहरी छैल छरैगी ॥ ३४० ॥

सोरठा ।

कमलनाल सी बाल, गोरी थोरे दिनन की ।
उर धरि गिरवरलाल, बड़बोली बोलै बयन ॥

असंगति लच्छन ।

कारन कहुँ कारज कहूं देस काल को बीच ।
कहत असंगति चख लगी बढ़तबिरह हिय बीच ॥

यथा ।

दानव दुज्जन की निकटौ बसिबो न भलो यह मंत्र अराधो । संगति दोस परोस लहौ दुख पावत पापिन के सँग साधो ॥ गोकुलनाथ तिहूंपुर के यह राम को काम बिचारि के काधो ।

सोयह लै दसकंध गयो है बिरोध बिनाहीं स-
मुद्दर बांधो ॥ ३४३ ॥

सोरठा।

लहत उरोजन ओज, गहत गरब मन पीय को।
तो उर बाढ़त बोझ, दबत जात हिय सौति को॥

द्वितीय असंगति लच्छन।

और ठौर चाहत कियो कियो औरही देस ।
कहत असंगति दूसरी जे हैं सुकबि सुबेस॥३४५॥

यथा।

कौल सी कोमल हैं इन पै इतनी निरदै-
पनता न बिचारो। पीन कठोर हैं श्रीफल सें
इन पै मन आवत सो निरधारो॥ गोकुलनाथ
खिलार खरे यह तौ न भलो बलि खेल तिहारो।
गेंद उठाइ उरोजन पै हरि जू ललना के कपोल
न मारो॥ ३४६ ॥

तृतीय असंगति लच्छन।

काज कियो चाहत प्रथम ताको कियो बिरुद्ध।
कहति असंगति तीसरी अलंकार मतिसुद्ध ॥

यथा ।

बकत बकत एरी देति क्यों बृथाही प्रान विना प्रानप्यारे कौन पल कल देत है । गोकुल कहत एक बात मों सो सुनि लीजै आनद को खेत जातें उपजत चेतु है ॥ बिरह तपैहै फेर पै है सियरैहै पेखि पीतम के पाइ पाइबे को यह हेतु है । पोखिबे को चाहत है नीर सों जगत तब सूरज सलिल पहिलेही सोखि लेतु है ॥ ३४८ ॥

सोरठा ।

कुटिल करी बिधि भौंह, पिय परसोहैं करन कों ।
अरि अलि तेरी सोंह, हांहीं ज्यों नाहीं सुरत ॥

विषम लंछन ।

घटना नहि समरूप की कीजै जहां निहारि ।
डारि मध्य किम सब्द है बरनो बिषम बिचारि ॥

यथा ।

उनकी सखी हो तुम क्यों न ऐसी कहौ एजू कछू हम रावरी जबान धरियतु है । सा-मुहें लै ऐहो तब आपुही लजैहो सुनो राका सोहें

कुहू कहो कहा डरियतु हैं ॥ महरम हीय ब्रष-भाननंदिनी के मरि गोकुल को ग्वाल कहो कैसे भरियतु है । कुंदन की माल ऐसी कहां राधिका जू कहां कारो कान्ह कैसे कै समान करियतु है ॥ ३५१ ॥

सोरठा ।

सुनि गुनि दीजे पीठि, नीठि नीठि इततें चलो ।
कहँ या नटकी दीठि, कुहँ तनुतन बलिरावरो॥

द्वितीय विषम लक्षण ।

कारन औरै रूप को कारज औरै रूप ॥
विषम अलंकृत दूसरो बरनत हैं कबि भूप ॥

यथा ।

गोकुल कहत हौं गयो हो सुरसरि तीर जहां मै निहाख्यो गुन अजब बिहारे को । चारि धरैं हाथ बीर बांकुरै विहंग जात सांपन पै सोय यों सुभाव बूढ़े वारे को ॥ चंदन की खौरि करै कुंकुम को डीर धरै बसन सपेद रूप हरद पखारे को । सुधा सौ तरंग को उमंग परसत देख्यो कुंदन से अंग भरै रंग घनकारे को ॥ ४५४ ॥

सोरठा।

सखि तो मनकी बात, हौं समुझो हजकी बसी।
ताको तन पियरात, जाको तन कारी लगै॥

तृतीय विषम लच्छण।

उद्दिम करतें इष्ट को होत अनिष्ट जु आय।
बिषम अलंकृत तीसरो बरनत हैं कबिराय॥

यथा।

रूपगुमानभरी अबलौं सबही को दसा सुनती उठ कोहि री। चोरिबे को चित से बित को चलि आईही पौरि पै आवत जोहिरी॥ गोकुल होत लखालखी पौरही ह्वै गयो चेटक सी चख पोहिरी। मै मनमोहन को कहां मोह्यो गयो मनमोहनहीं मन मोहि री॥ ३५७॥

सोरठा

सुख हित कीन्हो नेह, छैल छबीले लाल सों।
पुरजन बाढ़े तेह, भटकि गयो नट अनतहीं॥

चतुर्थ विषम लच्छन।

होइ अनिष्ट न समुझि यह कियो इष्ट व्यापार।
तापति भयो अनिष्ट तहँ चौथो विषम बिचार॥

यथा।

घैर बढ़ै ब्रज में अति बैर लखै सुनतै रति ते मति मोड़ी । आई गयो जमुनातट तें नट सो बनि गोकुल गावत टोड़ी ॥ नीठि दई हरि पै डरि पीठि कै अंचल ओट द्रिगंचल ओड़ी । दौरि मिली बरजो न रही यह ईठ कहा कहौं डीठि निगोड़ी ॥ ३६० ॥

सोरठा।

जातें लगै न डीठि, यातें चख चावड़ दयो ।
सखि दीन्हे हूं पीठि, डीठि लगी सबगांव की ॥

पञ्चम विषम लच्छन।

उद्दिम करते इष्ट को भयो इष्ट सो सिद्धि ।
बहुरि अनिष्ट भए विषम है पचओं बुधिनिद्धि ॥

यथा।

पौरि पै ठाढ़ी हुती अलि आजु त्यों आइ गए हरि आनददानी । देखतही नख ते सिख लौं सुख सो सरसी अखियां सियरानी ॥ गोकुल बोलि नजीक उन्हें हिय सों लगि जैबे को ज्यौं

ललचानी । हाय धौं आइ गई कितते इतने में कहा कहौं धाइ धधानी ॥ ३६३ ॥

सोरठा ।

बोलि लयो हरिधाम, कामकलानिधि सों कह्यो । त्यौं आई वह बाम, घरहाई बैरिनि बरी ॥३६४॥

षष्टम बिषम लक्षण ।

करत बुरो जहँ और को अपनोई ह्वै जाय । बिषम अलंकृत षष्टओं बरनत हैं कबिराय ॥

यथा ।

डारि ब्रम्हफांसि फांसि ल्यायो दसकंधर पै मेघनाद खेत मे ते देत दोह डंका को । बसन लपेटि बोरि तेल सों लगाइ आगि कौतुक बिलोकिबे को बाढ़े छोड़ि संका को ॥ गोकुल कहत गयो तरकि कँगूरन पै सुमिरि हिए में राम राय रन बंका को । जारिबे को चाहत लंगूर जातुधान देखो बीर हनूमान जू जराय दई लंका को ॥ ३६६ ॥

अपरंच ।

टूटत पिनाक धाक धावत धरा पै नेकु धी-

रज धरे न रहे टौरे आतुराई सों। बेर बेर करमे कुठार को सुढार करें झलकत बार बार मति रिस छाई सों॥ गोकुल कहत धाम धनुष के साथ लयो हाथ के कुवत राम सहज सुधाई सों। जीतिबे को आए भ्रिगुनंद रघुनंदन को जीते गये आपु भये रीते बीरताई सों॥ ३६७॥

सोरठा।

मैं चख मन चित लाइ, वाको पति हरिबे चह्यौ।
मेरोई मन हाइ, जात रह्यो मो हाथ सों॥३६८॥

सम लक्षन।

वस्तु दोइ सम करत है बरनन जहँ कबिराय।
अलंकार सम कहत हैं ग्रंथन को मत पाय॥

यथा।

मानुष देव अदेवन में इनको सरि को नर और न कीन्हों। हेरि तिहूंपुर में तिय में इनके सम रूप न मैं लखि लीन्हों॥ गोकुल धन्य धरा दरसी परसे इनके सरसी सुख चीन्हों। जोग कह्यौ इतनौ बिधि नै सम जानकी को बर रामै सो दीन्हों॥ ३७०॥

सोरठा।

जेहिबिधिरच्योगुपाल, तेहिठकुराइनिराधिका।
लखिदखहोतनिहाल,समंसरिजुगलकिसोरको॥

द्वितीयसम लक्षण।

कारन के सम बरनिये कारज को जेहि ठौर।
देखि सदृसगुन रूप तहँ बरनत हैं सम और॥

यथा।

गरजत घन तरजति विज्जु बार बार कूकत हैं मोर पिक पपिहा गरेरे हैं। झमकत जुगनू तिमिर चमकत जान बात सियरात लगैं गात हहरेरे हैं॥ गोकुल न ऐसी समै पीको कलपैयै कल पैयै बलि जैयै कहा ल्यौरन तरेरे हैं। एतिक कठोर होत हियो तरुनीन को री याही तें उरोज होत कठिन करेरे हैं॥ ३१३॥

सोरठा।

जगजीवन को चन्द, उदै होतहीं तम हरै।
छीरसिंधु को नन्द, क्यों न उजेरो होइ ससि॥

तृतीय सम लक्षण।

सिद्ध होत सोई अरथ उद्दिम करिए जौन।
बिना इष्ट अक्लेस पद सम कहि तीजो तौन॥

यथा ।

कोटिन भाँतिन कै छलकी बतियां तब तौं हिय लाइ लये हो । देखति हौं तो भले जु भले प्रगटो नितहीं नित नेह नये हो ॥ गोकुल-नाथ चलौ उतलों जब जैसो भयो तब तैसो भयो हो । चाहतही तुम सों वह मान सो नीको कख्यौ तुम मान दये हो ॥ ३७६ ॥

सोरठा ।

वह चाहतहीं साल, सारस कर बनिता नई ।
तुम बलि दई दुसाल, मुकुतमाल दैकै लई ॥

विचित्र लक्षण ।

उद्दिम फल विपरीति को करि बिचारियै जौन ।
अलङ्कार सु बिचित्र सो है विचित्र अति तौन ॥

यथा ।

गोकुल कहत आज अजब तमासो लख्यौ नरन को तरनितनुजा जू के तीर में । कुन्दन सौं अंग घसि धोवत उमंगभरे घन कैसो रंग-भरो चहत सरीर में ॥ राखिबे को लच्छि हिए

लच्छि त्यागि त्यागि एकै फूल भरे कूल बैठे धरें मति धीर में। पीरो कियो चाहत हैं चोर ते पखारत हैं बीर इन्दीबर ऐसे जमुना के नीर में॥ ३७९॥

सोरठा।

श्रुतिपथ लागे नैन, चहत नसायो श्रुतिपथहि।
हिय उभरोहौं हैं न, गहिरौ हौं चाहत भयो॥

अधिक लक्षण।

अधिक होत आधार जहँ पाइ बड़ो आधेय।
कहत अधिक ऽलंकार तहँ जे हैं सुमति अमेय॥

यथा।

बेलि बूटी गुलुम बिटप बर बृन्दगन दनुज मनुज पसुपच्छिन के कौस के। सरित समुद्र धाराधर धाराधर धरा दिसन समेत लोक दिग्गज दिगीसं के॥ गोकुल नखतगन ग्रह व्योम वायु तेज सुरन सहित सुरपति बिसे बीस के। इतनो जगत जाके उदर बसत सोई सोवतु है जगदीस ऊपर फनीस के॥ ३८२॥

अपरञ्च ।

मुरली मुकुट औ लकुट बनमाल गरें गुन की बिसाल छबिपुंज भरी भारी है । किंकिनी ललित सो बलित बिलसति लोनी काछनी कलित कटि पीतपट वारी है ॥ गोकुल बिलोकि कौन सकत सकल सोभा पानि पाय पेखि जाति पलक न पारी है । रावरे के नैनन की कहाँ लौं बड़ाई करौं जिन में बसत भावती जू गिरिधारी है ॥ ३८३ ॥

सोरठा ।

सब जग जाकी हीय, बसत सो गोकुलनाथ है ।
उर धरि राख्यौ तीय, तैं ताको कहिये कहा ॥

द्वितीय अधिक लक्षन ।

अधिकाई आधार की लहि अधेय अधिकाय ।
अलंकार सो अधिक है दूजो अति सुखदाय ॥

यथा ।

सासन सौं पिता के सिंघासन सो त्यागि आइ कीन्हो बनोबास धर्यो बलकल चीर को ।

दैतन सँघारि कै बिहार दंडकारन को टारि
दयो सोच सो सकल ऋषिभीर को ॥ गोकुल
कहत आए कुंभज के धाम राम हरष कह्यौ न
जात मुनि के सरीर को । जिनके उदर में स-
माइ गो समुद्र ताके उदर समातु है न जस
रघुबीर को ॥ ३८६ ॥

सोरठा ।

गिरि ते उरज उदार, तू उरमें गिरधर धर्यौ ॥
तो बेनी को भार, नहिं तो सो धरि परै॥३८७॥

सूछम लछन ।

तनु आधेय लहै परै जहां सु तनु आधार ।
तह सूछमलंकार है बरनत सुमति उदार ॥

यथा ।

पंकज से पग पानि लसैं चख चंचलता न
लखी चपला में । चंद सो आनन पीन उरोज
कसि भुज कंचुकी कोर बला में ॥ गोकुल रोम-
वली त्रिबली भरौ नाभि सरोवरि कामकला
में । लाल मिलाइहौं बाल तुम्हैं वह जाकी
करो कटि छीन छला में ॥ ३८९ ॥

सोरठा ।

मन यासों लपटाइ, वलै भयो बलि लाल को ।
यातें कछुक लखाय, लंक छबीली छैल की ॥

अन्योन्य लच्छन ।

जहां परस्पर हित तहां अन्योन्यालंकार ।
ज्यों मनिमालन तें उरज लसत उरज तें हार ॥

यथा ।

वै उनसों रति को उमहैं फिरि वै उनसों विपरीति कों रागैं । वै उनको पटपीत धरैं अरु वै उनहीं सो निलंबर मागैं ॥ गोकुल दोऊ भरे रसरंगनिसा भरि यों हिय आनंद पागैं । वै उनको मुख चूमि रहैं तब वै उनको मुख चूमन लागैं ॥ ३६२ ॥

सोरठा ।

रँग गोरे सो स्याम, लसत गोराई स्याम लहि ।
घन तें दामिनि काम, दामिनि तें घन घन फबै ॥

विशेष लच्छन ।

सो बिसेष आधार बिनु जहँ अधेय सुखरास ।
ज्यों बिछुरेंहू मीत के लगो रहत मन पास ॥

यथा।

जोई चहै हम सोई कहैं वे भरी हित प्रेम महा महती हैं। स्रौन सुधा सम चातिक प्रान को स्वाति के बूंदन लौं लहती हैं॥ गोकुल जी हीं अलीमन कों मधु सो विषकी गुन ते गहती हैं। मोहन के मथुरा के गएं अब वे बतियां हमकों कहती हैं॥ ३९५॥

सोरठा।

वैसेई करि अंग, वैसेही वैसी गढ़त।
बसी छाड़ि रति रंग, तो सौबी संग लाल कें॥

द्वितीय विशेष लच्छन।

बहुत ठौर कहियै जहां एक्क बस्तु को बूझि।
यहौ विसेष कहैं जिन्हैं परत सास्त्र मत सूझि॥

यथा।

कोठरी आंगन पौरि गली में अली गुरु-लोगन में महती हौं। घाट में बाट में गोधन ठाट में कुंजन पुंजन में गहती हौं॥ गोकुल नाथ बनो नट सो तट लागो रहै तुमसों कहती

हौं। नैनन में मन में हिय में जिय में वह मूरति मैं लहती हौं॥ ३९८॥

सोरठा।

सब छिन सांझ सवेर, और बाग बन घर गली।
सुनत बाँसुरी टेर, बौर बुरौ बसिबो इतै॥३९९॥

तृतीय विशेष लच्छन।

थोरेहीं आरंभ्य जहँ पैये वस्तु अलभ्य।
यही विसेष कहै सुनो जेहैं जग में सभ्य॥४००॥

यथा।

सोवत हूं जागत हूं सौतुक सपन हूं में रावरे को मन और बाम में न लेख्यो मैं। सिवाही सों उचित रुचति रेनु पाइन को चाइन सों इन्हें भली भांतिन सरेख्यो मैं॥ गोकुल कहत चिर जीयो पियो आनंद कों तुम सो न भागभरो भू पै और पेख्यो मैं। दंपति तिहारो प्रेम अति अभिराम सुनो आम कहौ आजु सीताराम जू को देख्यो मैं॥ ४०१॥

सोरठा।

सखि लखि बदन उजास, पाटीबंदन माग यों।
बोली ससि के पास, लही त्रिबेनी तो लखि॥

व्याघात लक्षण।

अन्यथा कारी है तथा कारी सो व्याघात ।
तथाकारि औ अन्यथा कारी जहँ ह्वै जात ॥

यथा।

मोहन के बिछुरे सजनी दुखदानि लगै सुखदानि हो जोई। चौसर चंदन चारु दुकूल लगैं सखि सूल से हैं सब धोई॥ गोकुल ख्वैवे को चांदनी में जो कहै तू कहा है अरी भ्रम भोई। जौन उबारत हो तन ताप सो जारतु है व सुधाधर सोई॥ ४०४॥

सोरठा।

सुख कर हुतो जो प्रेम, अलि सोई दुखकर भयो।
सो पावत कहँ छेम, बसत जो पास अहीर के॥

द्वितीय व्याघात लक्षन।

सो कारज निर्वह जहँ अपने है अवदात।
कार्ज बिरोधी होइ सो यही कहैं व्याघात ५॥

यथा।

क्योंकरिकै कहिये तुम जाह न जाहु क- -हौ तो चलैगो बलोना। जौ न लिख्यौ दुख औ

सुख भाल सो कोटि करै निघटै गोपलो ना ॥
आए हौ बूझन मोसों मया करि गोकुलनाथ
पियारे छलो ना । टारी कही बनवारी गई
बलि प्यारी कही तो रहौ जू चलो ना ॥४०७॥

सोरठा।

जो प्रभु जानत मोहि, दीन दूबरी अति दुखी।
तौ न छाड़िबे तोहि, दीनबंधु करुणाअयन ॥

कारनमाला लक्षण।

जहँ पूरुव पर हेतु की गुंफित कीजे माल ।
कारनमाला कहत हैं ताकों सुमति बिसाल ॥

यथा।

कौन घरी हुती जो गई ही कालिँदी के तीर
बीर धौं कहातें परे नैन वा बिलासी में। नैनन
तें लोभ बढ्यो लोभ सो लगनि बाढ़ी लगनि
सि बाढ़ी मन डरत न हांसी में ॥ गोकुल ति-
हारी सौंह मनतें बिरह बाढ़्यो बिरह तें बाढ़्यो
प्रेम फांसे लेत फांसी में। प्रेम सों बढ़ो है बड़ो
चौचंद चढ़ो है देखो घैर घरहाइन में बैर ब्रज-
बासी में ॥ ४१० ॥

सोरठा ।

लखि चख बाढ़्यौ नेह, बढ़ी नेह तें लगनि चित।
अब सखि दाहतिदेह, बिरहागिनिबढ़िलगन तें॥

एकावली लक्षण ।

गहिगहिं छोड़त अर्थ को जहँ सेनी की रीति ।
जपमाला कैसी बढ़ी एकावली सु रीति ॥४१२॥

यथा ।

कहत सलोनो सब-साँवरो अहीर एरी बीर की सौं कौन गुन वामें उभरतु है । औचक प्रभात जात गली में बिलोक्यौ आजु ताछिन तें ही में बिरहानल बरतु है ॥ गोकुल जहान में सुनति उपखान है री-सुधा सुधा ऐसो बिष बिष सो टरतु है । रूप लाग्यौ नैनन सौं नैन मिलि मन सोई मन लग्यौ प्रान पापी पीड़ित करतु है ॥ ४१३ ॥

सोरठा ।

घर तजि आँगन आइ, आँगन तें कढ़ि पौरि पैं।
पौरिछोड़ि बनजाय, फिरति बावरी लौं बिकल ॥

मालादीपक लक्षण।

होत जहाँ एकावली औ दीपक को संग ।
मालादीपक लसत ज्यौं मिलि पयोनिधि गंग ॥

यथा।

मन परवस होत गोत में अकस होत सो तह्यौ चवाय को समुद्द उभरतु है। छीन होत अंग पौन होत रंग पीरो हीरे ज्वाल सी जरति चैन बारि सी ढरतु है॥ गोकुल गसीले होत गुनगरुवे जे हरुवे ते अरसीले होत जस उतरतु है। नैन लागे नैनन सों नेको न लगति नैन पल को परति है न चैनन परतु है॥ ४१६ ॥

सोरठा।

धुनि स्रौन न परिजाय, जायनगुनिदुरजनसजन।
जन तन मन न सोहाय, हायबाँसुरी गोप कर॥

सार लक्षण।

अर्थन को उतकर्ष जहँ उत्तर उत्तर होत ।
अलङ्कार सो सार है बरनत हैं कवि गोत ॥

यथा।

सुमति भली है फेर सरधा भली है तासों

रसना भली है हरिगुन उचरन की। तासों भली बिरति बिसास की हिये में और तासों भली कीरति भगीरथ बरन की ॥ गोकुल भली है और तासों उपकार की औ तासों भली सोभा रनभूमि के धरन की । तासों भलो असरन सरन बसाइबो है भगति भली है तासों गुरु के चरन की ॥ ४१८ ॥

क्रमिका लक्षण ।

जथासंख अन्वय जहाँ क्रम सों लैये जानि ।
तहँ क्रमिकालङ्कार है बरनत सुकवि बखानि ॥

यथा ।

सम्पति में बिपति में नृपतिसभा में छमा धीरज भलो है चातुरी के सरसाये तें। रन मन तरुनी सों रोष तोष रस रीति नीति सों करै तौ लहै आनँद सोहाये तें ॥ गोकुल सु कवि कहैं गरब गरीबन सों ऐड़ दया मेड़ बाँधे बीरज के दाये तें। सत्रुन को मित्रन को परम पवित्रन को घालियतु पालियतु पूजियतु पाये तें ॥

सोरठा।

कच कुच चख चित बोल, चतुर कहै तरुनीन के।
कुटिलकठिनअतिलोल, नीतिनिठुरगरबनभरे ॥

परजाय लक्षण।

एक बीच परजाय जहँ कीजै बहुत बिचारि ।
अलङ्कार परजाय सो बरनत सु कवि निहारि ॥

यथा।

जौब नहीं जगति ललितपन जोति आली पोत सी सुतापन के खिल को रई नई। सन्धि ह्वै अज्ञात भई ज्ञात भई ज्ञान बस ह्वै करि नवोढ़ाहि एँ पौढ़ा उर सों छई॥ गोकुल कहत लाज काम मध्य मध्या भई महाबली काम देखो लाज लूटि सी लई। कूटि परी छबि कैसी मूठि गौनहाई संग वहै बैस बाल अंग ह्वै गई तरुनई॥ ४२४ ॥

सोरठा।

तो कुच की अनुहारि, रही गरब गह्यो गहै ।

* * * * *

द्वितीय परजाय लक्षण।

कै परजाय जहां कहै एकहिं ठौर अनेक ।
अलङ्कार परजाय सो कहत सु कवि गहि टेक॥

यथा।

रीति तैं पलटि कै अनीत में चलन लागे धरम छलन लागे अधरम काम में । सीलता सुधाई सूरताई बिसराई सबै कुटिल कुराई कादराई करै काम में ॥ गोकुल सुकवि कहै सज्जन सों दूरि रहै संगति असज्जन की चाहै चारो जाम में । देखो कलिकाल के नकाम ये करम मन सुमति को छोड़ि बसै कुमति के धाम में ॥ ४७० ॥

सोरठा।

जेहि हिय गह्वै सयान, अरि अलि तू आई चितै।
तेहि अब नह्यो सयान, सोक भांति धीरज धरैं॥

परिव्रत लक्षण।

थोरो दै कै लीजिये अधिक सो परिव्रत नेत ।
पीत हरा लख तै कोऊ लाल बिरानो लेत ॥

यथा।

बीचऊ न राख्यौ जैसो भाख्यो तैसो भाख्यौ भलें ताको फल चाख्यौ मतिही ते छीजियतु है। साँच माँच साँच के हो साहिब सरस सिन्धु जैसो कौल कीजियतु तैसो कीजियतु है ॥ गोकुल बिहारी हो तिहारी परमिति आगे और देखिबे को न हिए में जौ जियतु है। तनक देखाई पाव पाव परीं प्रानप्यारे ऐसे और काहू को जू मन लीजियतु है ॥ ४३० ॥

सोरठा।

तनक अधररस प्याइ, हाय कहा कहिये तुम्हे।
लयो लाल अपनाय, रूपसुधासागर अमल ॥

परिसंख्या लक्षण।

करि निषेध यल एक तें राखी औरै ठौर ।
वस्तु,धर्म गुन जाति जहँ परिसंख्या तेहिं ठौर॥

यथा।

बेल बीच कण्टक औ साल सालबाफन में खल के समूह रहै बैदन के घर में। बङ्कता क-

लङ्क मसिश्रृंग में सरेखी परै रहै है सँताप
सही सूरज के कर में॥ गोकुल कहत रह्यो दा-
रिद दरिद्रही को नीरसता मही में रही है मरु
धर में। बैठतही रामचन्द्र रावरे के राज रह्यो
रिन्द नाममाहि अरबिन्द सरवर में ॥४३३॥

सोरठा।

उरज उचाई लङ्क, तनुताई चखचपलता ।
सब जग तें बिनु सङ्क, लै बिधि कै एकत धरी॥

बिकल्प लच्छण।

तुल्ल बल बीच बिरोध जहँ लखौ बरनिये आनि।
नित्यनियमजहँहोतनहिंतहँबिकल्पअनुमानि॥

यथा।

जानि परै जू खिलार बड़े अरु फागु के खि-
लिबे में निपुनै हौ। चाव चढ़ीं चपला सी हैं
वे उनकी तन छाँह न छूवन पैहौ॥ संग सखानि
लये तुम गोकुलनाथ जबै बरसाने में जैहौ।
श्रीबृषभानलली को सखीन सों जीतिहौ कै
बलि हारि कै ऐहौ॥ ४३६॥

सोरठा ।

उनकी कुचन समान, सानु कहौ कलधौत के ।
सुनि बलि परमसुजान, ह्वैहै कै ह्वैहै नहीं ॥

समुच्चै लक्षण ।

बहुत भाव की गुँफ जहं एक समै में होत ।
कहत समुच्चै ताहि सब जेहैं कबि की गोत ॥

यथा ।

रमै पति संग रतिरंग में उमंगभरी सरस सुढंग पढ़ी कामकला बंक में । ससकि सिकोरै नाक जोरै चखचातुरी सों ऊबीसी उकसि भरै भावतें को अंक में ॥ गोकुल को अधर-मधुर मधुप्यावे पियै * * * * * * * मुरति परजंक में । गौहीं सतरौहीं होति बिहँसि लजौंहीं हेरि सङ्कि सी भिकुरि कै लचक डारै लङ्क में ॥ ४३९ ॥

सोरठा ।

ससकिभिकुरिसतराति,बिहसौहींभौंहनिचितै ।
नटति क्रुटति बतराति, रतिरस राती लाल सों ॥

द्वितीय समुच्चै लच्चण।

अहं शब्द को कीजिये जहाँ प्रथमही रूप ।
यही समुच्चै कहत हैं जे जग में कबिभूप ॥

सोरठा।

मेरो गुन लखि रूप, तुल न होत रतिमति भरी।
मेरेही बस भूप, जन तन मन धन दै भयो ॥

यथा।

पूत इन्द्रजीत सो सपूत सब भाँतिन में जङ्ग जुरे जाके होत देवता न नेरे हैं। भाई कुम्भकरन सहाई रनभूमि भिरे जातुधान बलवान सुभट घनेरे हैं॥ गोकुल कहत कहा मानुष बिचारे दाइ बानरौ समररूढ़ होत कहूं एरे हैं। सङ्कर समेत जापै तौल्यो रजताचल को हेरे बीस बीस ऐसे दोरदण्ड मेरे हैं॥

कारकदीपक लच्चण।

क्रमगतिभावसमूह को जहाँ गुंफ ह्वै जात ।
कारकदीपक कहत हैं जे जग मति-अवदात॥

यथा।

आइ मिलै निति साँझ भये चितचोप छये

सिगरी निसि जागें। अंग अनङ्ग तरङ्ग प्रकासत दोउ दुहून सों आनँद पागें॥ गोकुल भोर चलें घर को चित ऐसे बिछोह के छोह सों तागें। द्वैक चलें पग फेरि थिरें फिरि दोउ दुहून बिलोकन लागें॥ ४४५॥

सोरठा।

नटतिकहतिनटिजाय,कहतिगहतिगरुऔगरब।
मैं करि थकी उपाय, पी पायनि पारी चहति॥

समाधि लक्षण।

कारन अन्तर को जहाँ लहि कै समै सहाय।
कारज की को कार्ज जहँ तहँ समाधि ह्वै जाय॥

यथा।

सति भाग भरी है अरी वह ग्वालिनि गोकुलनाथ के प्रेम पगी। अति रूपमई नख तें सिखलौं तरुनापन की तन जोति जगी॥ जबलौं मिस कै पिय पास चलै हुती जोन्ह की जोति बिलोकि ठगी। घन कै तम को तबलौं दिसि घेरि घटा घन की घहरान लगी॥ ४४८॥

सोरठा ।

आइगयो पिय गेह, कछु कारज को मिस लये ।
सखि बिधि राख्यो नेह, नँदनन्दन त्योंहीं चल्यो॥

प्रत्यनीक लक्षण ।

जहँा पराक्रम पक्ष पर बली सत्रु के होत ।
प्रत्यनीक बरनत तहँा जेहैं कवि के गोत॥४५०॥

यथा ।

मानति नाहिं मनाय थकी सुनि हारि रही करि कोट कला कों । हौं इतकी हितकी मिति चाहि चुप्यौं न धरी मन मोद पला कों । भावतो जू हितु हौ तौ सहाय करौ जो चहौ उनके ऽब भला कों ॥ रावरे के मुख सों गयो हारि सतावतु है ससि नन्दलला कों ॥ ४५१ ॥

सोरठा ।

तो कच तें घनहारि, बैर भयो बारिद परै ।
इतको हित निरधारि, गरजि गरजि तरजैंउन्है ॥

काव्यार्थापत्ति लक्षण ।

जहँा अर्थ कैमुत्तको कहि कीजै पद सिद्धि ।
काव्यार्थापति कहत हैं अलङ्कार बुधिनिद्धि ॥

यथा।

श्रीवृषभानलली अँग तेरे कह्यौ सिगरे उपमान को गञ्जन। पाञ्जन कञ्ज उरू कदली कुच कोकनहूं को कियो मद भञ्जन॥ गोकुल आनन इन्दु अमी निदरै मुसुकानि करै मन रञ्जन। जीति लयो इन तीछन बाननि ईछन सोहैं कहा कहैं खञ्जन॥ ४५४॥

सोरठा।

तो कुच तें गिरिसानु, हारि हारि पाहन भये।
को सम कहत अयान, का ये श्रीफल तनक से॥

काव्यलिङ्ग लक्षण।

जो समर्थ जेहि काम में ताको कहिये अर्थ।
जा कारज में कहत तहँ काव्यलिङ्ग सामर्थ॥

यथा।

लाजन तें गुरुलोगन की न कछू मैं कह्यौ अब लौं दिन खिये। क्यों बकबाद बढ़ावति है चलि जाहि जिते हित को चित भेये॥ गोकुल-नाथ बिसासी के और कहाँ लगलों कहि ऐगुन

रे ये । क्यौं करि मैन सतैहै उन्हैं उनतौ उनकी कुच शङ्कर सेये ॥ ४५७ ॥

सोरठा ।

भान तपनि तिय संग, कौन भाँति रहिहै अरी ।
लहि पूनो परसंग, देखि सुधासागर उदै॥४५८॥

अर्थान्तरान्यास लक्षण ।

कहि सामान्य बिसेष कहि यों अर्थान्तरन्यास ।
मिटत खेद याकी लखें ज्यों जलधर तें प्यास ॥

यथा ।

जोई घरी थिर ह्वै मन दै कमलापति को धरि रूप निहारै । सोई परै भव बारिध पार दसौदिसि में जस जोति पसारै ॥ गोकुल पाइ-न छ्वै निकसी हरि के सिगरे जग कों निर-धारै । तारति देखो चराचर को यह भागीरथी अघओघ बिदारै ॥ ४६० ॥

सोरठा ।

होइ न कौन कठोर, निति बसि हिय तरुनीनकी।
लखि बलि उरजन ओर, और कहाँ लगहौं कहौं॥

अपरञ्च।

गोकुल हेरि बली-गुन-कीमति कोमलता कछु काढ़ि नई को। फूलन के धनु बानन सों मनमत्थ मथै सिगरी जगती को॥ कौन करै अचरज्ज अरी समरत्थन की लखि ये करनी को। बाँस की बाँसुरी बाय भरी यह बेधति है तरुनीन के ही को॥ ४६०॥

द्वितीय अर्थान्तरन्यास।

कहिये प्रथम बिसेष जहँ फिरि सामान्य सरूप।
सो अर्थान्तरन्यास है दूजो सुनहु अनूप॥४६३॥

तथा।

मन्दर सो गरु सारमई जेहि टारि सकै न सुरासुर जैहैं। सो रघुनाथ भुजान के जोर सों घोर पिनाक को टूक करैहैं॥ गोकुल बैस किसोर चितै मिथिलापुर के अचरज्ज नए हैं। कौन अकत्थ कहै इतनो समरत्थ बलीन के कारज एहैं॥ ४६४॥

सोरठा।

खल काल लेन न देत, ससि बैरी बिरहीन को।
बलि एसोई नेत, कहत कलङ्किन को जगत॥

विकस्वर लक्षण ।

कहि बिसेष सामान्य कहि फिरि बिसेष को रूप।
कहत बिकस्वर कवित में तासों सब कवि भूप॥

यथा ।

बारिद बाँधि सिलानि सों राम जू लै कपि को दल रावन माख्यो । कारज ए समरत्थन के चहियै इन को न अकत्थ बिचाख्यो ॥ गोकुल देत कहैं सो सुनो सत मानि हियै मति मैं निरधाख्यो । गोपन के हित हेत गोपाल लखौ सिसुतापन में गिरि धाख्यो ॥ ४६७ ॥

सोरठा ।

सिर चढ़ि बढ़ि नत कीम,भए यहै गति बड़न की।
लघु गुरु भए बिसेम, उरज तनेते हैं तऊ ॥

प्रौढ़ोक्ति लक्षण ।

काहू के उतकर्ष हित हेतु बरनियै और ।
अलंकार प्रौढ़ोक्ति सो बरनत कबि सिरमौर ॥

यथा ।

पान किए हूं दवानल कों जिहि को अधरा रस नाहिं डढ़ै री । ताकि लगी मुख सो यह

जाइ तौ ज्वाल सी तानति क्यों न गढ़ै री ॥ गोकुलनाथ कि हाथ बसो है बिसासिनि नाथि बे ही को काढ़ै री। छेदति या हियकों बँसुरी सखि पाहन फोरि कै बाँस कढ़ै री ॥ ४७० ॥

सोरठा।

तो भौंहन की रेख, लेखि परै ऐसी हिए ।
चित दै ह्वै अनिमेष, करी काम कमनैत की ॥

सम्भावना लक्षण।

एसो होइ तो होइ यों कहियै ऐसो तर्क ।
अलंकार सम्भावना कवि कमलन को अर्क ॥

यथा।

संकर सेइ है खेइ बड़ो तप लेइ है जो परदान सहैतू। काम सो कै हितसाम सरूप को माँगि सुधा सों सवाँरि नहैतू॥ गोकुल सूर की पूरी प्रभा तन छीरसमुद्र में न्हाइ रहैतू। एरे सुधानिधि एती बनै सरि राधिका के मुख की तौ लहैतू ॥ १७३ ॥

सोरठा।

अंधतमस कि कूप, परै न्हाइ निति कालिंदी ।
तो रोमावलि रूप, लहै पन्नगी तौ तनक ॥

ललित लक्षण।

वस्तु तके जहँ वाक्य के अर्थ वर्ण अनुमान।
जहँ बरनी प्रतिबिंब तहँ ललित कहो सुखदान॥

यथा।

मानि चवाइन को कहिबो मिलिहैं बड़-ताप की ताप जरें का। फेरि परौगी हहा करि पाइन रूसि गये पियपाय परें का॥ गोकुल-नाथ मिलें बिनु जौं निसि नास भई फिरि मान मरें का। जोबन वैसिही बीति गयो बिरधापन में पुनि व्याह करें का॥ ४७६॥

सोरठा।

बिनु सहचरी सहाय, मिलो चहति नटनागरहि।
कछु सखि कह्यो न जाय, बिनपाइनचलिबोचहै॥

मिथ्या लक्षण।

जहँ मिथ्या को सत करै कहि मिथ्या जन और।
मिथ्याध्यवसित कहत हैं अलंकार तेहिं ठौर॥

यथा।

गोकुलनाथ सुनौ बन में यह आजु बड़े अचरज्जहि लिख्यो। एक ससा गहि दौरि कै

सिंघहि फारत पेट पछारत पेख्यौ ॥ मीत कहीं यह सो सब साँच है ईश्वर की महिमा अवरेख्यौ। इंदुर एक दुरई कों आजु नदीतट में रह्यौ लीलत देख्यौ ॥ ४७९ ॥

सोरठा।

मैं चढ़ि सौध अमन्द, गहे मूठि भरि कै नखत।
मीत महूं गहि चन्द, अंक लए कबलों रह्यौ ॥

प्रहर्षन लच्छण।

जतन बिना जहँ होति है मन वांछित की सिद्धि।
कहत प्रहर्षन सुकबि सब अलंकार में रिद्धि ॥

यथा।

न्हात लख्यो जमुनातट जाकी सुबास की आस लगी अलिसैनी। चारु चकोरन की अवली मुखचन्द सो चाहि रही सुखलैनी ॥ गोकुलनाथ बिलोकि बिकानी से दूतिन को निधि लों कहि दैनो। ईठ बसीठ सुनी तब लों पठयो उहि आपुहि अंबुजनैनी ॥ ४८२ ॥

सोरठा ।

सुनि हरि के गुनगान, मै ललचौहीं ह्वै रही ।
आइ गयो सुखदान, आजु अचानक भौन में ॥

द्वितीय प्रहर्षन लच्छन ।

अधिक अर्थ की प्राप्ति जहँ मनबांछित में होत ।
यही प्रहर्षन मिलति ज्यौं मुकुता चाहत पोति ॥

यथा ।

हीरो छेदाय छिलाय कै अंगनि हाट अनेक फिरे न थिराने । गोकुलनाथ सनाथ के ह्वबे को हेरतही मन में ललचाने ॥ आपुन के कर में बसिवे को ये याही तें रावरे हाथ बिकाने । भाग लखौ मुकुतान को एजू हरा ह्वै उरोजन सों लपटाने ॥ ४८५ ॥

सोरठा ।

सुनिवे को तो-बैन, खरे पौरि पासहिं हुते ।
अमित लह्यो हरि चैन, दयी कृपाकरि तुम चितै॥

तृतीय प्रहर्षन लच्छण ।

कारनबिन जहँ हात है लाभ तुरितही सिद्धि ।
यही प्रहर्षन कहत हैं अलंकार में रिद्धि ॥४८७॥

यथा।

गोकुलनाथ मिल्यौ तट पै धरि कै इकठे पट साथही न्हायो। जांत रह्यो चितचोर कहीं हो मरू करिकै घर धाम लौं पायो॥ भाग कहा कहिये अपनो चह्यो दूतिन को धन दै कै पठायो। ईठ सुनौ कहिबै तबलौं वह ढीठ बसीठ ह्वै आपुहीं आयो॥ ४८८॥

सोरठा।

धन दै पठै बसीठ, आवतही अपने सदन ॥
मिली बीचही ठीठ, ईठ पीठि देत न बनी ॥

विषादन लक्षण।

मनबांछित में होत जहँ अर्थबिरोध अमान ।
कहत बिषादन कुंद ज्यौं लहत उदै ते भान ॥

यथा।

आजु कह्यौ मनभावन सौं मैं अटा पर फूलन-सेज बिछैबे । चैत की चांदनी चाव बढ़ी सो निसा भरि कै रतिरंग मचैबे॥ गोकुलनाथ कहैंगे कहा सखी कौन उपाइ किये हिय लैबे।

आइ गयो पति छाइ बिदेस तें जाय कहै न कहा कहौं दैश्रै ॥ ४६१ ॥

सोरठा।

मैं चाह्यो गहि पीय, हिये लाय आनँद भरौं।
त्यौं घरहाई तीय, आइ गई बैरिन बरो ॥

उल्लास लच्छन।

गुन तें गुन अरु दोष ते दोष होत उल्लास ।
दूषन तें गुन होत जहँ गुन तें दूषन पास ॥

गुन तें गुन यथा।

पाइन पीडुरी जंघ नितंब भगी बिधि लंक लोनाई हितै कै । नाभिथली बलि रोमवली कुच कुंभनि कै करिकुंभ जितै कै ॥ गोकुल पानि भुजानि लखे मुख नैनन दैत अमी अमितै कै । क्यौं बस होहि न भावती जू मन भावतो रावरो रूप चितै कै ॥ ४६४ ॥

गुन ते दोष यथा।

सोर पर्यौ सिगरे जग में उलह्यो ब्रजभूप को पूत नयो है। देखिबे को उमह्यो सब लोग

लखें मन मोद की मूरिमयो है ॥ गोकुल हैंहू हिए हरखी चलि चाहतही गिरि ज्ञान गयो है । आंखिनही पद पैठि गयो Sब वहै न टरी नटसाल भयो है ॥ ४९५ ॥

मुद्रा लच्छन

सूच्छ अर्थ सूचन जहां प्रकृति अर्थ में होय ।
अलंकार मुद्रा तहाँ बरनत हैं कबि लोय ॥

यथा।

मोर-किरीट कुटी जुलफैं मकराकृत कुंडल कान निरेख्यो । गुंजहरा मखतूल छरा कटि काछनि पीत पितंबर भेख्यो ॥ गोकुल गावत बेनु बजावत रूप सों मैन लजावत लेख्यो । है सुधि तोहिँ अरी जमुनातट पै नट जो वह वा दिन देख्यो ॥ ४९७ ॥

रतनावली लच्छण।

प्रकृत अरथ क्रमसों जहां बरनत हैं कबिलोग।
अलंकार रतनावली ज्यों रतनन को जोग ॥

यथा।

फागुन में मधु माधव में अरु जेठ असाढ़

लिखै मनमानै । सावन भादव आश्विन कातिक औ अगहन्नहु में न भुलानै ॥ गोकुल पूस में माघहु में बदे औधि के झूठे कितेक ठिकानै । आवन के मनभावन जू के अरी सजनी परै मास न जानै ॥ ४९९ ॥

सोरठा ।

पग पिडुरिन चढ़ि लंक, बलि रोमावलि उरजपै ।
सनमुख रूप असंक, लहिभूलो कच घन गहन ॥

तदगुन लक्षन ।

छोड़ि आपुनो गुन जहां औरन को गुन लेत ।
अलंकार तदगुन तहां बरनत हैं करि हेत ॥

यथा ।

भार भयो बिरहानल झार सों भौन भटू इतनो तपयो है । स्वास समीर की लूवन ते मनो ईंधन के ढिग जान गयो है ॥ गोकुल पीतम प्यारे बिना करि जात कछू न उपाय नयो है । भावती के तनताप-तपे यह माह अरी जरि जेठ भयो है ॥ ५०२ ॥

सोरठा।

पहिरावति नहि संक, मुक्तहरा तिय के गरे ।
लखि लचकौहीं लंक, बारभार तें होत गुनि ॥

पूरब रूप लच्छन।

तजि औरन को गुन जहां गुन अपनोई लेत ॥
पूरबरूप तहां सुकबि बरनत हैं करि हेत ॥

यथा।

भागभरी ठकुराइनि जू तिय और न आपुन सी अनुमानो। क्यौं न बसै बस भावन तो गुन रूप बिलोकि बिलोक सयानो ॥ गोकुल बेसरी को मुकुता यहि भांति लख्यो सुखमा सरसानो। लाल भयो अधरा रँग सौं मुसुकानि मढ़ो मुकुतै ठहरानो ॥ ५०६ ॥

अपरंच।

कै सब सेत सिँगार चल्यौ तुम भेटिबे को बन मै बनवारी। सोचति जौ मन को धनि तू लखि जाइबे को कछु हो न डरारी॥ गोकुलनाथ बिलोकि बलाइ ल्यौं चारुता चारु चहूंघा बि-

हीरौ । आठयें के ससिहूं के अथौत भई मुख रावरे की उँजिआरी ॥ ५०७ ॥

सोरठा ।

भयो सुतन तो स्याम, स्याम भयो तोतन सरस ।
हो पहिचानी बाम, तुम्है आजु मिलि कै छुटै ॥

अतदगुन लछन ।

संगतिहूं गुन और को जहां लगत नहिं नेक ।
अतद्गुनालंकार तहँ बरनत कवि गहि टेक ॥

यथा ।

अंक में राखि निसंक सदा गत-बैस भई जब तें लरिकाई । नीति अनीति सहौं सिगरौ हित रीति करी इनसों मनभाई ॥ गोकुल पीतम को लखि दोस न रोस करौ सो कहौ जू कहाई । प्रानपिया हिय रावरे को न सिखो है उरोजन सों कठिनाई ॥ ५१० ॥

सोरठा ।

बसि बलि बलि की संग, रही सदा गुन सों गुही ।
तज न ह्वै गइ भंग, तो नीबी की कृपिनता ॥

अनगुन लचन ।

पर सनिद्ध तें सिद्ध गुन ताको जहँ उतकर्ष ।
अलंकार अनगुन तहां वरनत कबि गहि हर्ष ॥

यथा ।

राति जगी कहूं रंगपगी यह जो समुझी तुम सो सति नाही। नैनन की अरुनापनता लखि कै भ्रम भूरी भरी मन माहीं ॥ गोकुलनाथ सखा सँग न्हात में कीतौ तरंगनि मैं अवगाहीं । ह्वै गए औरज लाल सुनो परि रावरे की पग की परछांहीं ॥ ५१३ ॥

सोरठा ।

बुधिवर कहत कठोर, गोपख्याति जनपांति में ।
तुम बलि बाढ़े चोर, बसी हिए लरुनीन के ॥
अरी लाज रहि जाय, यातें ब्रजवनितान की ।
परि पुतरी न लखाय, स्याम सलोनो गात में ॥

सामान लचन ।

बस्तु दोइ सम रूप की जुदी न चाही जाति ।
सो समान्य बेनीमिली अलिअवली न लखाति ॥

यथा ।

ओपभरे हैं कछू उभरे हैं करी बिधि आपनी हाथ सँवारे । गोकुल रोमवली सों खिले अलि की अवलीन को हैं प्रनधारे ॥ चारु सुगंध-सने सुखमा सुचिरंग-रँगे सुकुमारता भारे । कोल-कलीन के हार मिले न लखी लखि जात उरोज तिहारे ॥ ५१७ ॥

मीलित लच्छन ।

बस्तु दोइ सम रूप की अवयव सो मिलि जाय।
सो मीलित ज्यौं दूध में पानी परि न लखाय ॥

यथा ।

हौं तो रही मन में डरतै गुन रावरे जानि सबै बनमाली । जो उनकै पग जावक दै कै हहा करि कै रति को रति पाली ॥ गोकुलनाथ सबै कढ़तो हित होतो न जो कर को अरुनाली। लाल कछू कहतौंऽबै लखी परतो लखि ज्यों अँगुरीन की लाली ॥ ५१८ ॥

वैसेख्य लच्छन ।

मीलित में जहँ एक को बढ़ि गुन धर्म लखाय ।
सो वैसेख्य मिले सलिल ज्यों मिश्री मधुराय ॥

यथा।

मालती कौल कदंबनि छोड़ि सुबास की बास लए सुखदैनी। आनँद रंगमए भए भौंर रहै बढ़ि कै मढ़ि कै चढ़ि बेनी॥ गोकुलनाथ सुजान सही पै चली न कछू मति की गति पैनी। लालहिं जानि परी सजनी करकै परसें अलकौ अलिसैनी॥ ५२१॥

उन्मीलित लच्छण।

जहँ मीलित गुन रूप की कछू भेद बिलगाय।
उन्मीलित सुरसरि मिले ज्यौं जमुनालखिजाय॥

यथा।

राति अँधेरी चितै नभ की सब स्याम सिँगार करे मृगनैनी। गोकुलनाथ चली हरि पै ज्यौं तामल पै जाति चली अलिसैनी॥ हो हूं गई सजनी सँग पै न लखी पथ में अखियाँ करि पैनी। बाल गई मिली कै तमजाल में जानि सुबास परी सुखदैनी॥ ५२३॥

गूढ़ोत्तर लच्छण।

गूढ़ोत्तर उत्तर जहाँ चतुराईजुत होय।
घाट पथिक नौको जहाँ बाढ़ो घनी घमोय॥

यथा ।

हाट सी लागति भौंरन की कुसुँभीं लतिकान की कुंज घनो है । छांहछई छिरकी मकरंद पिकीन को ब्रन्द न जात गनो है ॥ गोकुल बूझत हौ तौ कहौ जो अन्हाइवे को जमुना में मनो है । ठाट बड़े सुख को लहिये वह जोबन के तट घाट बनो है ॥ ५२५ ॥

चित्रोत्तर लक्षण ।

चित्रोतर जहँ प्रश्न तें उत्तर कही न आन ।
इनको गयोरि मानको उनको गयोरि मान ॥

यथा ।

आनन चारु चलै चख है कुच-कोकन की उपमानता गोई । लौटपरी लकि लंक लफै सटि जंघ नितंबन के भर भोई ॥ गोकुलनाथ सों बूझो हों मै उन उत्तर मोहि दयो फिरि सोई । जाति हुती घर को भरि कै जमुना तटतै घट नागरि जोई ॥ ५२७ ॥

सूक्ष्म लक्षण ।

चित्तवृति लखि और की चेष्टा व्यंग्य समेत ।
करै जहां सूक्षम तहां कहत सुकवि जुत चेत ॥

यथा।

खेलत गँजीफा हुती लाड़िली अली सों आयो देवर परोसी जो हिए में हेलियतु है। जासो होइ सूरज सही सो डारि देहु कही सजनी सयानी यों हुकुम झेलियतु है॥ गोकुल सुजान जानि लयो जानिवे कों तौन कैसेहू न पैथै मति ही को बेलियतु है। फेकि दयो चंद चंदमुखी चातुरी सो चाहि पीतम कही यों आछो खेल खेलियतु है॥ ५२९॥

पीहित लक्षण।

व्यंग्य सहित चेष्टा करै पर वृत्तान्तहि जानि।
पीहित रतिश्रम खेद लखि बीजन दीन्हो आनि॥

यथा।

आइये बैठिये ऐंठिये आन न आपुन ही महाराज महाजन। गोकुल हौं बलि जाति चितौ गुन रावरे जानत कोऊ कहा जन॥ और कछू न कहौं इतनो कहि चातुर चारु छबीली सुसाजन। धोइबे को मुख पीतम के ढिग आनि धस्यौ जल सों भरि भाजन॥ ५३१॥

व्याजोक्ति लक्षण ।

जहँ छपवै आकार कहि अन्य हेतु की बोल ।
व्याजउक्ति ओहि बाग सखि भौरन डसे कपोल॥

यथा ।

लावत कोऊ न पौरि पै पापिनि बैरी बरी भरी-कंटक पैनी । बीरन सो कहियै री इहा करि काटिबे जोग इहै दुखदेनी ॥ गोकुल चातुरतापन सों इमि धाइ पै जाइ कह्यौ मृ-गनैनी । आवत हूं घर जात लगै फटि देखि गई सिगरी उपरैनी ॥ ५३३ ॥

गूढोक्ति लक्षण ।

औरै प्रति उद्देस करि कहैं और सों बैन ।
सो जानत गूढ़ोक्ति यह जिनकी मति अति पैन॥

यथा ।

देवर नन्द सखीन लए सब सासु गोसा-इन तीरथ जैहैं । और परोसहुँ के सब लोग ते जाइहैं बीच बसि फिरि ऐहैं ॥ गोकुलनाथ लख्यो लखतै दुख बैन कहै जे सुनै सुखदै हैं ।

क्यों करि हौं या निसा सजनी इतने बड़े भौन में एकली रैहैं॥ ५३५॥

विव्रतोक्ति लक्षण।

गुप्त कहत अश्लेस जहँ कविजन सुमतिअगार।
विव्रतोक्ती ऽलंकार तहँ बुधजन को सुखसार॥

यथा।

आनँदरूप भरी रस सों जु भली विधि सों विधि तोहि सँवारो। आपुनही सब सौतिन के तन जोबन को सिगरो मद गारो॥ गोकुल चारु सुबास-सनो मुख पंकज है बलि जाइ तिहारो। चोर भयो निसि द्योस रहै यह भौंर भटू पियरे पटवारो॥ ५३७॥

जुक्ति लक्षण।

काहू के भै तें जहाँ छपिवे को आकार।
क्रिया करै तहँ जुक्ति है जुक्तिभरो ऽलंकार॥

यथा।

देखतही हरि को पटओट भयो अलि जो मन कंजकली को। देखि भखी यों लखी सखी

धाय कै हाय भलो न सँकेत गली को ॥ गोकुलनाथ कियो सो कहैं तब आइ उपाइ सुनो नवली को। बैठि गई हँसिकै धसिकै पटओट रही गहि पाय अली को ॥ ५३९ ॥

लोकोक्ति लक्षण।

जहँ कहनाउति लोक की तहँ लोकोक्ति समाज।
अरी नैन लागे जहां तहां कहा डर लाज ॥

आई तरुनाई ओप औरै अंग छाई तेरे अंगनि गोराई की धसी सी धार चहियै। नैनन की बैनन की अधर उरोजन की रोमअवली की त्रिवली की कहा कहियै ॥ गोकुल कहत बीति गए तै बसंत फेरि अपनो अयान अपसोसन ही सहियै। आपुनही क्यों न मनमोहन मिलैंगे सुनो बीति गए पावस पयोधर उलहियै ॥ ५४१ ॥

अपरञ्च।

बैरभरैं घरबारे गाउबारे धरै करैं सखिन को बैन सो करेजो कोड़ियतु है। तुम

आए जोग ल्याए भाए बैन भाखत हौं बारेहू की अति मति कैसि मोड़ियतु है ॥ गोकुल बिसासी लिखे पाती कछुं ऐसी सुनो बाँचतही जाकि चितचैन छोड़ियतु है। जौंलौ देह दोषी यह तौलौं सब सहैं ऊधो जैसी बाड़ बहै तैसी पीठि ओड़ियतु है ॥ ५४२ ॥

छेकोक्ति लक्षण।

जहँ परार्थ की कल्पना लोकउक्ति में होय ।
कहा अकेलो तरनि जौ उयो तरैयनि खोय ॥

यथा।

क्यौं समुझावति हौ हमकों हम जानति हैं कछु भेद न नीके। गोकुलनाथ भलो तुमहूं तुमहूं को लगै सिगरे जन नीके ॥ आए भयो दिनचारि हमैं बसी आपुन हौं कब को सँगपीकैं। जानत हैं जगतीतल में सुनौ साधु सबै गुन साधुनही के ॥ ५४४ ॥

बक्रोक्ति लक्षण।

काकुस्लेस में अर्थ पर जहां कहै निरबारि ।
अरी दान दै दूध कै माँगे पैहौ चारि ॥

यथा।

काम सतावतु है उनको छन बैठि रहैं श्रम की बहती है। प्रीतम की परसें सुख होत उलूकन की बतियां नहती है॥ गोकुल पौरिहि पैं हरि हैं गहि डोरि तिन्है जो कछू चहती है। री कलपावति है हम यों कल पावति हैं तो कहा कहती है॥ ५४६॥

काकु तें यथा।

राति कहूं बहु कै रतिरंग चलै उठि कै घर को हरि जैसे। औचक आन गली में मिली वृषभानलली जू अली सुनि तैसे॥ हेरि रही नख तें सिख लों करि गोकुल लोयन लोल अनेसे। फूल की मालन सों गई मारि कह्यो फिरि कै मिलिहो हरि ऐसे॥ ५४७॥

स्वभावोक्ति लक्षन।

सुभावोक्ति वै जाति कै कहिये जहां सुभाय। लखत लाल की नौलतिय लखिचख लेत चोराय॥

यथा।

भरि पाय घुघुरू निहारि नारि नाय लखै

अंचल उघारत गहत मनिमाल री। उतरत चढ़त दुरत दौरि घुँटुवन उचकि उचकि पलका पै हाल हालरी। गोकुल लसत चोटी नथुनी तनक छोटी दतियाँ देखावे मुख बनक बिसाल री॥ ताकि मुख माय को हँसत किलकत क्यों न गोवै ताप नैनन को जोवै नंदलाल री॥

यथा।

आँगी फटैगी कछू तौ कहा कहि कै सह बासिन मै बसिहै गी। * * * * * * * ॥ गोकुलनाथ न मानत हौ हम लाजकी लेजन सौं फसिहै गी॥ छोरौ चुनौनि न नौबी की लालन हेरि हमैं सजनी हसिहै गी॥ ५५०॥

अपरंच।

अंग अलसाने पियराने थहराने पग ठहराने परत सु डग मग मैंहै ना। छाई कुच स्यामताई चीकनाई कैसन में नौबी उकसौंही भई त्रिबली उचौहैं ना॥ गोकुल कहत लाल लहैगी सलोनी चढ़ि याके तन औरै चारुताई चित ऐंचै ना।

ढरकि सी भौंहैं परी भरी भार लाजन कै हर-
कि गई सी गति गदरावने नैना ॥ ५५१ ॥

भाविक लच्छन।

भाविक भूत भविष्य को जहँ कहिये साच्छात।
अब हूं देखि परै अरी वहै सांवरो गात ॥५५२॥

यथा।

बार बड़े बड़री अखियाँ मुख चारु उरोजन ओज महा री। गोकुल रोमवली त्रिवली कटि छाम महा लखि जात कहा री॥ काल्हि हती जमुनातट पै नख तै सिखलौं भरी कामकला री। नैनन में अबलौं है बसी वह नागरि नारि बड़ी नथवारी ॥ ५५३ ॥

उदात लच्छन।

स्लाघ्यचरित रिधि अन्य को अन्योपलच्छित होत।
परसि उदात सु होत जन गंगाजी को सोत ॥

स्लाघ्य चरित यथा।

तोरि कै पिनाक मान मोरि भृगुनंदन को भगति के बस आए धीमर के धाम हैं। मारि

खरदूषन सँघारि बलि बीर कीन्हों सुगरीवै राज रहै बिपति ते छाम हैं ॥ बांधि सेत समुद में रावन को जीति दई लंका में बिभीषन कों जाकि ऐसे काम हैं । गोकुल जगतईस बीस बिसे अभिराम जोग जपिबे कि सुनो दासरथी राम हैं ॥ ५५५ ॥

रिधि चरित यथा।

हाथी दए घोरे दए जरिन के जोरे दए और सुखपाल रथ गथन सो भोए हैं। मोतिन की माल दए मनिन के जाल दए भूषन बिसाल जे दरिद्र दुति गोए हैं ॥ गोकुल कहत राम राय को बिवाह भए भिच्छुक न भूपन तें जुदे जात जोए हैं। एतो दान दयो महाराज दस-रत्थ देखो गुनिन के गन सों न धन जात ढोए हैं ॥ ५५६ ॥

अत्युक्ति लच्छन।

अत्युक्त्यतथ्य उदारता कहौ सूरता जौन ।
होत धनद भिच्छुक सुनो तुम सों मांगत तौन।

यथा।

आजु कौन तोसी बार बधुन के वृन्दन में अमल अनूप गुन रूप सों बढ़ति है। तेरे मुख अमित मधुर मुसकानि सो है देखु निचुरी सी चंदचंद्रिका चढ़ति है॥ गोकुल पियारे के हिया रे हरिवे को तुही काम जंच मंत्रन के तंत्रनि पढ़ति है। एरी भागभरी तेरो तान की तरं· गनि सों अंगनि अनंग की उमंगि सी मढ़ति है॥ ५५८॥

निरुक्ति लक्षण।

निरुक्ति नाम के जोग तें अर्थ प्रकल्पन आन।
क्यौं न होहि माधौ स्ववस लखि बेनी सुखदान॥

यथा।

बकरा गहाइ देहु होहूं लैं डगरि जाऊं सुनो भयो खरिका बिलोकें डरियतु है। नोखे कहा होत हौ अनोखी चोखी अँखियन सखिन के आगे तौ न ऐसे अरियतु है॥ बबाको सों तोहि ह्वैहै दाऊ हारही पे सुनो गोकुल पियारे पतिह्वौ

को परियतु है। सोरत सुधाकर से आकर गुननि भरे नीति करि लीन्हें हूं अनीति करियतु है॥

अपरंच।

दूरिहि बैठी रहौ बरजैं जो भयो सो भयो ऽब कछू न कहौ जू। आपुन को अपराध कर्यो न कछू तुम को बरजोर गहौ जू॥ गोकुल जैसे हौ तैसे भले हौ भलेन के संग भलाई लहौ जू। पाय परैं दुख देत महा हम जानत हैं न कहा हरि हौ जू॥ ५६१॥

प्रतिषेध लक्षण।

प्रतिषिध प्रसिध निषेध को अनुकीर्तन अभिराम। है न अहीरिनि औरही राधे है सुनुं स्याम - ॥

यथा।

गोकुलनाथ मनै करिये अबहीं तुमको हित सों ढरिबो है। श्रीठकुराइनि राधिका के अति दुस्सरही मन को हरिबो है॥ कोऊ न कोऊ कहैगो सुनो यहि गाँव चवाइन में डरिबो है। है इनसों हँसिबो री सुनो उनके यह पायन को परिबो है॥ ५६२॥

विधि लचेण ।

जहँ विधान सिधिवस्तु को तहँ बिधि २ सों भात ।
परै जौहरी के सु कर तंव मनि मनि ठहरात ॥

यथा ।

चौसर चंदन सो चुपरे सुचि कंचन की रुचि सों भरि भावैं । उन्नत पीन कठोर महा मकरध्वज के करिकुंभ लजावैं ॥ गोकुल कंचुकी बीच दुरे दुरि देखतहीं कुलकानि दुरावैं । लागत है पिय के हिय सों तब ओज भरे ते उरोज कहावैं ॥ ५६५ ॥

हेतु लचण ।

हेतुमान के संग जहँ हेत कही तह हेतु ।
बिघनहरन कों सामुहें बिघनेस्वर सुख देतु ॥

यथा ।

मानस सरोवर में फूलेई रहत तूले परमा परम पूरे परिमल माम के । कोट कमनीय रमनीय सुखमा के ओक लोक सब कीवे को असोक अभिराम के ॥ गोकुल लखत राते अरुन उदैं लों भरे भा ते हरे तिमिर अजाम के